RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

साहित्य में वर्णित राजनीतिक मूल्य

सन्जू

एम. ए. हिन्दी (नेट)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
आदर्श, जीवन, राजनीति, स्वार्थ, मूल्य

ABSTRACT

साहित्य ऐसा शस्त्र है जो बिना प्रहार के ही मनुष्य को निढ़ाल कर सकता है। नरेन्द्र कोहली के साहित्य में वर्णित राजनीतिक मूल्यों में आज की राजनीति की झलक दिखाई देती है। आज की राजनीति साम, दाम, दंड़, भेद की राजनीति रह गई है। राजनेता अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए जनता को प्रलोभन देते हैं। प्रजा के साथ खुला विश्वासघात करते हैं। राजनीति ऐसा कुचक्र है इसमें जो भी आता है वह इसी के रंग में रंग जाता है। आज राजनीति से सिद्धांत तथा आदर्श लुप्त होते जा रहे हैं। राजनीतिक मूल्यों से तात्पर्य है कि जो मूल्य नैतिक सामाजिक व धर्मानुरूप हैं। इसमें स्वतंत्रता, समानता व षांति समाहित हैं। भारतीय संस्कृति में राजनीति को मानव धर्म का निर्वाह करने वाली शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। हमारी संस्कृति प्रारम्भ से ही मूल्यों से ओत–प्रोत रही है। राम तथा कृष्ण जैसे महान राजनीतिज्ञ रहे हैं। उनकी शासन प्रणाली में सभी मूल्यों का पालन हुआ है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य के माध्यम से ही साहित्यकार समाज की धारणा तथा परम्पराओं को विचार का रूप देते हैं। साहित्य में साहित्यकारों ने जहाँ एक ओर स्वस्थ, सुदृढ और आदर्शमय प्रजातंत्र की स्थापना के लिए उपेक्षित राजनीतिक मूल्यों का चित्रण किया है वही दूसरी ओर उन्होंने सत्ता के लिए अपनाए जाने वाले हथकण्डों तथा राजनीतिक षड़यंत्रो का भी पर्दाफाश किया है। राजनीतिक मूल्यों व आदर्शों को अपनाकर कोई भी देश उन्नति तथा विकास की ओर अग्रसर हो सकता है। किसी भी देश की समृद्धि के लिए राजनीतिक मूल्य उसका आधार होता है। धर्म जाति और समाज की आड़ में जो विघटनकारी शक्तियाँ उभर रही हैं, उसमें मानवीय मूल्यों का विघटन हो रहा है। आज का राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य उसके लिए आधार का कार्य कर रहा है।

उद्देश्य :–

साहित्य में वर्णित राजनीतिक मूल्यों को अपने शोध पत्र के रूप में लिया है क्योंकि आज समाज में दिन प्रतिदिन मूल्यों का विघटन हो रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों के विघटित रूप को अनुभव किया जा सकता है। राजनीति में यदि मूल्यों का समावेश समाप्त हो जाता है तो मानव कल्याण सम्भव नहीं होगा। आज राजनीति स्वार्थ, भ्रष्टाचार की राजनीति रह गई है। मेरा प्रमुख उद्देश्य लोगों को चेताना है कि राजनीति में मूल्यों का समावेश अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा देश पतन की ओर अग्रसर हो जाएगा।

प्रस्तावना :–

'मूल्य' शब्द अंग्रेजी के (Value) शब्द का अनुवाद हैं। **अंग्रेजी–हिन्दी प्रशाासनिक कोष के अनुसार (Value) शब्द का अर्थ** :– 1.मूल्य, भाव 2. उपयोगिता, महत्त्व आदि होता है। मूल्य शब्द की व्याख्या अत्यन्त व्यापक व अनेक दृष्टिकोणों से की गई है।

'मूल्य' शब्द सर्वप्रथम अर्थशास्त्र में मूल्य के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता रहा है। धीरे – धीरे इसका प्रचलन भिन्न अर्थ में होने लगा है। व्यक्तिवादी, समाजवादी, योगवादी, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक आदि सभी दृष्टिकोणों से मूल्य का प्रयोग होने लगा है।

'मूल्य' शब्द मूल धातु से भाव में यत् प्रत्यय करके बना है, जिसका अभिप्राय किसी वस्तु के विनिमय में दिया जाने वाला धन, दाम, बाजार भाव आदि है। 'मूल्य' शब्द का यह अभिधेय अर्थ है। परन्तु प्रचलित अर्थ में 'मूल्य' शब्द का अर्थ विस्तार कर मानव की समाजिक एंव सांस्कृतिक अवधारणाओं के सम्प्रत्यय का बोधक भी बन गया है। मानव के मन में विचार जन्म लेते हैं, उसी से धारणा का जन्म होता है बाद में यही धारणा मूल्य का रूप धारण कर लेती है।

किसी वस्तु या विचार के प्रति हमारी धारणाएँ ही मूल्यों को जन्म देती हैं। मूल्य समाज के साथ परिवर्तन होते रहते हैं। 'मूल्य' मानव समाज तथा संस्कृति में महत्त्वपूर्ण तत्व माने जाते हैं। किसी भी समाज में 'मूल्य' को उसकी श्रेष्ठता का संवाहक तत्व माना जाता है। प्रत्येक युग के अपने अलग मूल्य होते हैं। समाज में व्याप्त मान्यताएँ रीति–रिवाज, प्रथाएँ एवं कुछ निष्कर्ष हैं, जो समय के साथ परिवर्तित होते हैं। समाज में सदैव ही मूल्य बनते रहे हैं और बदलते भी रहे हैं। समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यों का निर्धारण करता है।

जीवन शब्द अंग्रेजी के (life) शब्द का हिन्दी पर्याय है। **अंग्रेजी–हिन्दी प्रशासनिक शब्दकोश के अनुसार जिसका अर्थ है–** जीवन, जीव, स्फूर्ति, भाव आदि। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, वह प्राचीन काल से ही अपने जीवन में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

समाज की मान्यताओं तथा धारणाओं को शामिल करता आया है। समाज में व्याप्त मान्यताओं तथा धारणाओं से ही मूल्यों का जन्म हुआ है। मनुष्य के जीवन में मूल्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मूल्य मानव व्यक्तित्व को सही मायने में दिशा प्रदान करते हैं। समाज मे प्रचलित मान्यताएँ व विचार ही जीवन मूल्यों का निर्धारण करते हैं। समाज में मूल्य बनते तथा बिगड़ते हैं। समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही मूल्यों का निर्धारण होता है। समाज में सभ्यता तथा संस्कृति मूल्यों को बनाए रखने का कार्य करते हैं।

''दुर्खीम ने भी मूल्यों को सामाजिक आदर्श के रूप में स्वीकारते हुए माना है कि मूल्यों की विवेचना समाजिक तथ्य के रूप में ही करनी चाहिए।''

मूल्यों के प्रकारः–

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने मूल्यों को अनेक भागों में विभाजित किया है। उन्हीं के आधार पर मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

1. वैयक्तिगत मूल्य
2. पारिवारिक मूल्य
3. सामाजिक मूल्य
4. राजनीतिक मूल्य
5. धार्मिक मूल्य
6. साहित्यिक मूल्य
7. शैक्षणिक मूल्य

साहित्य प्रारम्भ से ही आत्माभिव्यक्ति का अच्छा स्त्रोत रहा है। साहित्य सृजन करते हुए साहित्यकार जीवन मूल्यों और उसके विकास की सम्भावनाओं पर निर्द्वन्द्व होकर विचार करता है। साहित्यकार के साहित्य में अपने आप ही समाज में व्याप्त प्रथाएं, परम्पराएँ, रीति–रिवाज आदि उतर आते हैं, जिसमें हम जीवन मूल्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। साहित्यकार के साहित्य में समाज में व्याप्त धारणाओं पर विचार करते हुए मूल्यों का निर्धारण करता है। साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों से भिन्न नहीं होते हैं। साहित्यकार केवल सहित्य ही नहीं लिखता, अपितु सहित्य के माध्यम से समाज की परम्परा, धारणा व मान्यताओं का सजीव चित्रण करता है, जिसमें मानव मूल्य निहित होते हैं।

साहित्य में समाज की स्थितियों का वर्णन करते हुए साहित्यकार पूर्ण प्रयास करता है कि अपने साहित्य के माध्यम से नवीन मूल्यों की अभिव्यक्ति को स्थापित कर सके। कोई भी साहित्यकार अपने आप को समाज से अलग नहीं रख सकता है। उस पर समाज का गहरा प्रभाव पड़ता है। साहित्यकार पर समाज की परिस्थितियाँ भी प्रभाव डालती है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों का प्रभाव समाज में व्याप्त मूल्यों पर भी पड़ता है। साहित्य में सदा से ही मानवीय मूल्यों का समावेश रहा है समय के साथ समाज मे व्याप्त मूल्यों में परिवर्तन होता रहता है और साहित्य भी परिवर्तित होता रहता है। साहित्यकार जिस युग में, जिस परिवेश में जीता है, उसे पहचानने की क्षमता उसमें निहित होती है। वह समाज में फैली कुरीतियों, परम्पराओं तथा धारणाओं को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बना कर साहित्य का सृजन करता है।

साहित्य का समाज से और समाज का राजनीति से सम्बन्ध है। किसी भी देश की राजनीति उस देश का विकास व उन्नति निर्धारित करती हैं। राजनीति में यदि राजनीतिक मूल्यों का समावेश न हो तो उस देश का विकास असंभव है। राजनीति और साहित्य दोनों का ही मूल उद्देश्य मानव कल्याण है। साहित्य का संबध मानव की सृजन शक्ति से है जबकि राजनीति का सम्बन्ध राज्य की शासन प्रणाली से है। राजनीति समाज का अभिन्न अंग है तो साहित्य उससे कैसे अछूता रहता। साहित्यकार यदि जीवन की वास्तविकता को व्यक्त करना चाहता है तो उसे राजनीति को अपने साहित्य में स्थान देना ही होगा। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के सभी साहित्यकारों की रचनाएँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राजनीति से जुड़ी रही हैं। जहाँ आधुनिक काल के लेखकों ने अपने साहित्य में राजनीतिक मूल्यों का चित्रण किया है। वहीं आडम्बरों, षड़यन्त्रों व हथकण्डों का भी पर्दाफाश हुआ है।

राधा कमल मुखर्जी के अनुसारः– ''राजनैतिक सत्ता के द्वारा या किसी समुदाय द्वारा मानवीय मूल्यों की सुरक्षा तथा स्थायित्व रखना, वृद्धि करना और उनमें सामंजस्य बिठाये रखना आवश्यक है।''

नरेन्द्र कोहली ने अपने साहित्य के माध्यम से वर्तमान राजनीति को उजागर करने का प्रयास किया है। नरेन्द्र कोहली ने 'अवसर' उपन्यास में रामकथा को आधार बनाकर आधुनिक युग के मूल्यों के साथ विश्लेषण करने का प्रयास किया है। नरेन्द्र कोहली के साहित्य में निम्न राजनीतिक मूल्यों का वर्णन मिलता हैः–

1. राष्ट्रीयता की भावना :–

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति मूल्यों से परिपूर्ण रही है। साहित्यकार अपने साहित्य में उन्हीं मूल्यों के परिवेश को अपनाता है। नरेन्द्र कोहली ने भी अपने साहित्य में नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक मूल्यों को समाहित किया है। 'महासमर' में कोहली जी ने राष्ट्र प्रेम की भावना, स्वाधीनता आदि का चित्रण किया है। मनुष्य को अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। वह अपने परिवारजनों के प्रति लगाव रखता है वही राष्ट्रप्रेम के रूप में परिभाषित कर दिया जाता है।

'महासमर' के (बन्धन) उपन्यास में सत्यवती देवव्रत को राज्य त्याग की प्रतिज्ञा से बाँध देती है। देवव्रत का नाम उस प्रतिज्ञा के कारण भीष्म हो जाता है। भीष्म में राष्ट्रीयता का भाव ही था जो वह चाह कर भी राज्य का त्याग नहीं कर पाता। अंत तक राज्य की सुरक्षा तथा व्यवस्था के लिए चिंतित

रहता है। भीष्म का राष्ट्रीय प्रेम ही था जो वह चित्रांगद की मृत्यु हो जाने पर स्वंय राजा न बनकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए राज्य के संरक्षक के रूप में तैयार हो गए।

महासमर' (अधिकार) उपन्यास में पाण्डवों को लेकर कुन्ती हस्तिनापुर वापिस आती है तो वह राष्ट्रीयता व अधिकार के प्रेम के कारण ही सम्भव हो पाया है जब कुन्ती पाण्डु के साथ शतश्रृंग पर्वत पर रह रही थी तब भी पाण्डु हस्तिनापुर को याद करता था, तो यह राष्ट्रीयता की भावना नहीं तो क्या है ? जब–जब अपने देश की याद आती है तब–तब प्रत्येक मनुष्य प्रतिक्षण पीड़ा भोगता है। कुंती अपने पुत्रों को सदैव शिक्षा देते हुए कहती है कि सच्चा राजनेता वही है जिसमें जीवन मूल्यों का समावेश है। अतः कहा जाता है कि नरेन्द्र कोहली के साहित्य में राष्ट्रीता की भावना दृष्टिगत होती है।

2. एकताः–

एकता से तात्पर्य एकजुट होने से है। यह ऐसा राजनीतिक मूल्य है जिसके द्वारा वर्तमान मे व्याप्त अधिकांष विसंगतियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। नरेन्द्र कोहली के उपन्यास साहित्य में जो एकता और सद्भाव देखने को मिलता है उससे खुशहाली और समृद्धि का द्वार खोला जा सकता है। एकता, शौर्य और संगठन का ऐसा ही संदेश कोहली जी 'महासमर' उपन्यास के 'अधिकार' में प्रस्तुत करते हैं। इसमें पाण्डव एकता, शौर्य, और संगठन का परिचय देते हुए हस्तिनापुर में होने वाले षड़यंत्रो, निर्लज्ज स्वार्थों और भोग का साहस के साथ सामना करते हैं। अंत में इसी एकता के कारण धर्म संस्थापना करने में सफल भी होते हैं। पाण्डवों की एकता ही अंत में उन्हें विजय दिलाती है। आज हमें अपने जीवन में उस एकता को उतार कर एक खुशहाल व समृद्ध जीवन की आवश्यकता है।

3. अखण्डता :–

अखण्डता एक ऐसी शक्ति है जिसे टुकड़ों में खण्डित नहीं किया जा सकता । किसी भी समाज में मानव जाति का कल्याण तभी हो सकता है। जब हम एकजुटता के साथ संगठित होकर रहें। आपसी भेदभाव व वैमनस्य हमें पतन की तरफ ले जाता है। महासमर–1 (बन्धन) उपन्यास में सत्यवती व उसके पिता के वैमनस्य के भाव के कारण ही हस्तिनापुर की दशा दयनीय व भयावह हुई। देवव्रत ने सदा हस्तिनापुर को एकजुट रखने का प्रयास किया परन्तु सत्यवती के द्वेष के कारण वह उस में सफल नहीं हो पाया। अच्छे राजनीतिक मूल्यों में अखण्डता का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। महासमर–2 (अधिकार) उपन्यास में धृतराष्ट्र के वैमनस्य व भेदभाव पूर्ण व्यवहार को वर्णित किया गया। जिसे देखकर आधुनिक राजनीति का विश्लेषण किया जा सकता है। युधिष्ठिर भी हस्तिनापुर में राम राज्य का पूर्ण प्रयास करता है परन्तु पारिवारिक कलह और भेदभाव के कारण वह इस खाई को नहीं आट पाता। परन्तु पाण्डवों में अखण्डता की शक्ति और समर्पण के भाव को देखा जा सकता है।

4. युद्ध और शांति :–

युद्ध एक ऐसी समस्या है जो सम्पूर्ण जगत मे व्याप्त है। सृष्टि के आरम्भ से ही हमने अनेक भयानक युद्धों के अभिशाप को सहन किया है। युगों से युद्धों को टालने के प्रयास होते रहे हैं। परन्तु युद्ध नहीं टलता है। युद्ध का मूल उदेश्य शांति की स्थापना रहा है। 'महासमर' (प्रत्यक्ष) उपन्यास में भी युधिष्ठिर के राज्य के लिए युद्ध होना था, वह युधिष्ठर ही युद्ध के पक्ष में नहीं था। युधिष्ठिर धर्म का सच्चा साधक था वह धर्म की स्थापना शांति से चाहता था युद्ध से नहीं। 'प्रत्यक्ष' उपन्यास में ही अर्जुन हताश होकर शस्त्र समर्पण कर देता है। अर्जुन भी शांति से ही धर्म स्थापना का प्रयास करता है। परन्तु शांति स्थापना के लिए युद्ध हुआ और युद्ध से ही निर्बन्ध में शांति की स्थापना हुई।

5. भ्रष्टाचार :–

राजनीति में हमेशा से ही सकारात्मकता के साथ नकारात्मकता भी शामिल रही है। आधुनिक युग की राजनीति में भ्रष्टाचार, अराजकता तथा अन्याय शामिल है तो प्राचीन काल भी इस से अछूता नहीं था। 'महासमर' – 2 (अधिकार) में प्रशासक के रूप में धृतराष्ट्र भी अपनी सुविधा के लिए नियम बनाता तथा तोड़ता है। धृतराष्ट्र का शासन इतना भ्रष्ट हो गया था कि षासन पर अधिकार की तीव्र इच्छा में वह सही और गलत की पहचान भी नहीं कर पाता है। राज्य के लिए अपने ही भाई के पुत्रों के वध के लिए षड़यंत्र में शामिल हो जाता है। वह पुत्र मोह के कारण अन्यायपूर्ण तथा भ्रष्ट राजनीति को अपनाकर अपने ही राज्य में अराजकता फैला देता है। इसी अराजकता और अन्याय के परिणाम स्वरूप महाभारत का युद्ध होता है। यह युद्ध केवल शस्त्रों का युद्ध नहीं है यह टकराहट मूल्यों और सिद्धांतो की भी है, प्रवृतियों और प्रकृति का भी है। इसमें अधिकारों के लिए निरन्तर होने वाले षड़यंत्र, अधिकार प्राप्त करने की तैयारी तथा संघर्ष को वर्णित किया गया है। इस उपन्यास में राजनीति में अधिकार प्राप्ति के लिए होने वाली हिंसा तथा राजनीतिक त्रास के बोझ में दबे हुए असहाय लोगों की पीड़ा तथा निर्लज्ज स्वार्थ को देखा जा सकता है।

6. धर्म :–

धर्म किसी भी मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। धर्म के बिना धर्म के व्यक्ति दिशाहीन हो जाता हैं। 'महासमर' उपन्यास का चौथा खण्ड – 'धर्म' है। पाण्डवों को राज्य रूप में खाण्डवप्रस्थ मिलता है, जहाँ न कृषि है, न

व्यापार। चारों ओर अराजकता फैली हुई है। युधिष्ठिर धर्म का पालन करते हुए नृशंस नहीं होना चाहता, परन्तु आनृशंसता से प्रजा की रक्षा नहीं हो सकती। दूसरी तरफ अर्जुन को राज धर्म का पालन करने के लिए अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ती है तथा बारह वर्षों का ब्रह्मचर्य पूर्ण वनवास स्वीकार करना पड़ता है। अर्जुन ने बारह वर्षों में न ब्रह्मचर्य का पालन किया और न ही वनवासी रहा । क्या यह धर्म है ? अर्जुन व कृष्ण मिल कर खाण्डव–वन को अग्नि मे समाहित कर देते हैं। क्या यह धर्म है ? युधिष्ठिर राजा थे। उन्होंने इस हिंसा की अनुमति कैसे दी ? धर्मराज होकर भी युधिष्ठिर ने द्यूत खेला क्यों ? अपने भाईयों व पत्नी को द्यूत में दाँव पर लगाया और हार गया। यह किस प्रकार का धर्म है ?

नरेन्द्र कोहली के साहित्य में जीवन मूल्यों के नकारात्मक और सकारात्मक स्वरूप दोनों का चित्रण किया गया है। यहाँ पर राजनीतिक मूल्यों को वर्णित करने का प्रयास किया गया है। 'महासमर' उपन्यास को पढने के उपरान्त आपका राजनीतिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो जाएगा। इनके साहित्य में राजनीति की झलक को देखा जा सकता है। रामकथात्मक उपन्यासों में राम को यथार्थ रूप से जन सामान्य के निकट लाकर खड़ा कर दिया है। रामकथात्मक उपन्यासों राष्ट्रीय प्रेम, धर्म अखण्डता व एकता के साथ–साथ जागरूकता का स्वरूप भी देखने को मिलता है। इस प्रकार कोहली जी के साहित्य मे राजनीतिक मूल्यों का निर्वाह हुआ है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप से साहित्य में मूल्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्य में समाज का और समाज में राजनीतिक मूल्यों का समावेश होता है। राजनीतिक परिवेश ही समाज को उन्नति और विकास की ओर अग्रसर करता है। समय के साथ समाज में परिवर्तन हुआ है और समाज के साथ–साथ राजनीति में भी मूल्यों में परिवर्तन हुआ है। राजनीति में मूल्यों के विघटन को देखा जा सकता है और साहित्य भी राजनीतिक मूल्यों से अछूता नहीं रह सका है। राजनीति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों स्वरूपों का चित्रण साहित्य में मिलता है। साहित्य के क्षेत्र में राजनीतिक मूल्यों में राष्ट्रीय प्रेम, धर्म, अखण्डता, एकता तथा भ्रष्टाचार के साथ–सात जागरूकता का स्वरूप भी देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

क्र0. सं0.	रचना का नाम	लेखक	पृ0 सं0	प्रकाशन
1.	बदलते–मूल्य और आधुनिक हिन्दी नाटक	डॉ ओम प्रकाश सारस्वत	4	मंथन पब्लिकेशन्स, रोहतक
2.	स्वातन्त्र्योतर हिन्दी उपन्यासः संक्रमण	डॉ0 हेमेन्त कुमार पानेरी	12	संधी प्रकाशन, मूल्य जयपुर
3.	हमारे जीवन मूल्य	डॉ0 शंकर दयाल शर्मा	17	प्रवीण प्रकाशन, महरौली,नई दिल्ली
4.	बन्धन (महासमर – 1)	नरेन्द्र कोहली	33	वाणी प्रकाशन
5.	अधिकार (महासमर –2)	नरेन्द्र कोहली	59	वाणी प्रकाशन
6.	अधिकार (महासमर –2)	नरेन्द्र कोहली	66	वाणी प्रकाशन
7.	वही	वही	29	वही
8.	धर्म (महासमर –4)	नरेन्द्र कोहली	66	वाणी प्रकाशन
9.	धर्म (महासमर –4)	नरेन्द्र कोहली	69	वाणी प्रकाशन
10.	अंग्रेजी – हिन्दी कोश	फादर कामिल बुल्के	817	कैथलिक प्रैस रांची द्वि0सं0 1971
11.	अंग्रेजी – हिन्दी प्रशासनिक कोश	कैलाश चन्द्र भटिया	112	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
12.	आधुनिक काव्य में नवीन राजपाल	डॉ0 हुकुमचंद	39	भारतीय संस्कृत जीवन – मूल्य भवन जयपुर

RRIJM 2015, All Rights Reserved